विक्रम, भारतीय संगीत में वाद्य यंत्रों का महत्व, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.3 (जून 2025), पृ. 14-19

भारतीय संगीत में वाद्य यंत्रों का महत्व

विक्रम*

भारतीय संगीत केवल ध्वनियों का एक समुच्चय नहीं है, बल्कि यह एक समृद्ध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और कलात्मक विरासत है जिसकी जड़ें सहस्राब्दियों पुरानी हैं। यह मानव आत्मा की अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली माध्यम है, जो भावनाओं, विचारों और परंपराओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी पहुंचाता आया है। इस महान परंपरा को मूर्त और जीवंत रूप देने में **वाद्य यंत्रों (Musical Instruments)** का योगदान अतुलनीय और अपरिहार्य है। वाद्य यंत्र केवल लकड़ी, धातु या तार के टुकड़े नहीं हैं; वे संगीतकार की कल्पना, निपुणता और गहन भावनाओं के विस्तार हैं, जो श्रोताओं के हृदय तक सीधे पहुँचते हैं। भारतीय संगीत के संदर्भ में, वाद्य यंत्रों के बिना उसकी कल्पना करना भी असंभव है।

वाद्य यंत्रों का ऐतिहासिक और पौराणिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय वाद्य यंत्रों का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना स्वयं भारतीय सभ्यता का। सिंधु घाटी सभ्यता के पुरातात्विक उत्खननों में मिले नर्तक और संगीतकारों की मूर्तियों से यह स्पष्ट होता है कि उस समय भी संगीत और वाद्य यंत्रों का प्रचलन था। वैदिक काल में, यज्ञों और अनुष्ठानों के दौरान **दुंदुभि (एक प्रकार का ड्रम)**, **वीणा** और **बाँसुरी** जैसे वाद्यों का उपयोग किया जाता था। सामवेद, जो भजनों और मंत्रों का संग्रह है, में संगीतमय उच्चारण के महत्व पर जोर दिया गया है, जहाँ वाद्यों की भूमिका केंद्रीय थी।

प्राचीन भारतीय संगीत के सिद्धांत और व्यवहार को समझने के लिए भरत मुनि का **"नाट्यशास्त्र"** (लगभग 200 ईसा पूर्व - 200 ईस्वी) एक आधारभूत ग्रंथ है। इसमें नाट्य, नृत्य और संगीत के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत वर्णन किया गया है। नाट्यशास्त्र में वाद्य यंत्रों का वैज्ञानिक वर्गीकरण किया गया है, जो आज भी भारतीय संगीतशास्त्र में मान्य है। भरत मुनि ने वाद्यों को चार मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया:

1. **तत् वाद्य (तार वाद्य):** वे यंत्र जिनमें तार कंपन से ध्वनि उत्पन्न होती है (जैसे वीणा, सितार, सारंगी)।
2. **सुषिर वाद्य (फूँक वाद्य):** वे यंत्र जिनमें हवा के प्रवाह से ध्वनि उत्पन्न होती है (जैसे बाँसुरी, शहनाई)।
3. **अवनद्ध वाद्य (ताल वाद्य):** वे यंत्र जिनमें चमड़े से मढ़े हुए मुख पर आघात से ध्वनि उत्पन्न होती है (जैसे तबला, मृदंगम)।
4. **घन वाद्य (ठोस वाद्य):** वे यंत्र जो धातु या लकड़ी के ठोस टुकड़े होते हैं, जिन्हें आपस में टकराकर या पीटकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है (जैसे मंजीरा, घटम)।

मध्यकालीन भारतीय इतिहास, विशेष रूप से सल्तनत और मुगल काल, में संगीत और वाद्य यंत्रों में अभूतपूर्व विकास हुआ। इस दौरान भारतीय और फ़ारसी संगीत परंपराओं का संगम हुआ, जिसके परिणामस्वरूप **सितार** और **तबला** जैसे नए वाद्यों का आविष्कार हुआ या मौजूदा वाद्यों में महत्वपूर्ण सुधार किए गए। अमीर खुसरो जैसे संगीतज्ञों को कई वाद्यों के विकास का श्रेय दिया जाता है। मंदिरों, राज दरबारों और विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों में वाद्यों ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और विकसित हुए। इस प्रकार, वाद्य यंत्रों ने भारतीय संगीत के ऐतिहासिक विकास में एक सक्रिय और परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है।

प्रमुख भारतीय वाद्य यंत्र और उनकी विशेषताएँ

प्रत्येक भारतीय वाद्य यंत्र की अपनी अनूठी ध्वनि, बनावट, बजाने की तकनीक और संगीत में विशिष्ट भूमिका होती है।

5. तत् वाद्य (तार वाद्य): रागों की अभिव्यक्ति

तार वाद्य भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा माने जाते हैं, क्योंकि वे रागों की सूक्ष्म बारीकियों, मींड (ग्लिसांडो), गमक (कम्पन) और भावुक अभिव्यक्तियों को अत्यंत सटीकता से प्रस्तुत करने की क्षमता रखते हैं।

- **वीणा:** यह भारतीय संगीत के सबसे प्राचीन और पवित्र वाद्यों में से एक है, जिसे अक्सर ज्ञान और कला की देवी सरस्वती से जोड़ा जाता है। इसके विभिन्न प्रकार हैं जैसे **रुद्र वीणा (उत्तरी भारत)**, **सरस्वती वीणा (दक्षिणी भारत)**, **विचित्र वीणा** आदि। वीणा की गहरी, गुंजायमान और चिंतनशील ध्वनि रागों की शुद्धता और गंभीरता को बनाए रखती है। यह ध्यान और आलाप के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मानी जाती है।
- **सितार:** सबसे लोकप्रिय और बहुमुखी भारतीय शास्त्रीय वाद्यों में से एक। इसकी मधुर, लचीली और विस्तृत ध्वनि इसे खयाल, ठुमरी और अन्य शैलियों के लिए आदर्श बनाती है। इसमें मुख्य तारों के साथ-साथ **सिम्पैथेटिक स्ट्रिंग्स (अनुनादी तार)** भी होते हैं जो ध्वनि को समृद्ध करते हैं और एक अद्वितीय गूँज उत्पन्न करते हैं। सितार अपनी गतिशीलता, जटिल ताना-बाना (तेज गति से बजाई जाने वाली धुनें) और भावनात्मक रेंज के लिए जाना जाता है।
- **सारंगी:** यह एक अत्यंत अभिव्यंजक तार वाद्य है जो मानव आवाज की नकल करने की अद्भुत क्षमता रखता है। इसकी दर्द भरी और भावपूर्ण ध्वनि इसे ठुमरी, दादरा, गज़ल और लोक संगीत के लिए विशेष रूप से उपयुक्त बनाती है। यह अक्सर गायकों का साथ देती है और उनकी आवाज को पूरक करती है। सारंगी को बजाना अत्यधिक कठिन माना जाता है, और इसके मींड व गमक अद्वितीय होते हैं।
- **संतूर:** मूल रूप से कश्मीर का एक लोक वाद्य, जिसे महान पंडित शिवकुमार शर्मा जैसे कलाकारों ने शास्त्रीय मंच पर स्थापित किया। यह एक **हथौड़े वाला डुलसीमर** है जिसमें सैकड़ों तार होते हैं, जिन पर छोटे लकड़ी के हथौड़ों से प्रहार करके ध्वनि उत्पन्न की जाती है। इसकी मधुर, झरना जैसी और मंत्रमुग्ध कर देने वाली ध्वनि इसे अद्वितीय बनाती है।
- **सरोद:** यह एक गंभीर और शक्तिशाली ध्वनि वाला तार वाद्य है, जिसकी उत्पत्ति रबाब से मानी जाती है। इसकी गहरी, प्रतिध्वनित करने वाली ध्वनि और मींड (बिना किसी फ्रेट के तार पर उंगली खिसकाकर) की क्षमता इसे गंभीर रागों और आलाप के लिए उपयुक्त बनाती है। सरोद का गमक और दमदार टोन इसे अन्य तार वाद्यों से अलग करता है।
- **तानपुरा:** यह एक साधारण लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण तार वाद्य है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत में **श्रुति (आधारभूत स्वर)** और **हार्मोनिक सपोर्ट** प्रदान करता है। इसकी निरंतर गूँजती हुई ध्वनि (ड्रोन) संगीतकार को राग की शुद्धता बनाए रखने में मदद करती है और संगीत को एक आधारभूत लय प्रदान करती है। यह गायन और वाद्य यंत्र दोनों के साथ अनिवार्य रूप से संगत के रूप में प्रयोग होता है।

6. सुषिर वाद्य (फूँक वाद्य): मधुरता और निरंतरता

फूँक वाद्य अपनी मधुरता, निरंतर ध्वनि और विशिष्ट टोन के लिए जाने जाते हैं, जो अक्सर मानव आवाज के करीब होते हैं।

- **बाँसुरी:** यह एक सरल, बांस से बना लेकिन अत्यंत शक्तिशाली और मधुर वाद्य है। बाँसुरी की मधुर और मनमोहक ध्वनि श्रोताओं को शांति और आनंद प्रदान करती है। भगवान कृष्ण से जुड़ी होने के कारण यह आध्यात्मिक महत्व भी रखती है। पंडित हरिप्रसाद चौरसिया ने इसे विश्व स्तर पर ख्याति दिलाई।
- **शहनाई:** यह एक मंगलकारी वाद्य है जो अपनी तीखी, मधुर और पैठ बनाने वाली ध्वनि के लिए जाना जाता है। शहनाई का उपयोग अक्सर मंदिरों, विवाह समारोहों और अन्य शुभ अवसरों पर किया जाता है। महान उस्ताद बिस्मिल्ला खान ने इसे शास्त्रीय संगीत के मंच पर सर्वोच्च स्थान दिलाया।
- **हारमोनियम:** पश्चिमी मूल का होने के बावजूद, हारमोनियम भारतीय शास्त्रीय संगीत, विशेषकर भजन, ग़ज़ल और लोक संगीत में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। यह अक्सर गायकों और वाद्य यंत्रों के साथ संगत के रूप में प्रयोग होता है, स्वर और लय दोनों में समर्थन प्रदान करता है।

7. अवनद्ध वाद्य (ताल वाद्य): लय और गति

ताल वाद्य भारतीय संगीत की लयबद्ध आत्मा हैं। ये संगीत को गति, ऊर्जा, संरचना और जीवंतता प्रदान करते हैं।

- **तबला:** यह सबसे प्रमुख ताल वाद्य है और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में इसका व्यापक रूप से उपयोग होता है। तबला विभिन्न ध्वनियों (**बोल**) और जटिल लयबद्ध पैटर्न (**ताल**) की एक विस्तृत श्रृंखला का उत्पादन कर सकता है। यह गायन, सितार, सरोद और अन्य वाद्यों के साथ संगत के रूप में अपरिहार्य है। इसकी जटिल लय और improvisational क्षमता इसे अद्वितीय बनाती है।
- **मृदंगम्:** दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत (कर्नाटक संगीत) में मृदंगम् एक प्रमुख ताल वाद्य है। इसकी गहरी और गुंजायमान ध्वनि जटिल लयबद्ध संरचनाओं और सोलो प्रस्तुतियों को प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। यह कर्नाटक संगीत के सभी वाद्यों और गायन के साथ संगत के रूप में प्रयोग होता है।
- **पखावज:** यह एक प्राचीन ताल वाद्य है जिसका उपयोग मुख्य रूप से ध्रुपद गायन और प्राचीन वाद्य यंत्रों जैसे रुद्र वीणा और ध्रुपद पर बजाए जाने वाले अन्य वाद्यों के साथ किया जाता है। इसकी ध्वनि मृदंगम् के समान होती है लेकिन इसमें अधिक गुंजायमान और शक्तिशाली स्वर होते हैं।
- **घटम्:** यह एक मिट्टी का घड़ा है जिसे दक्षिण भारतीय संगीत में ताल वाद्य के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसकी अनूठी ध्वनि और हाथ से बजाने की तकनीक इसे विशिष्ट बनाती है। यह अक्सर अन्य ताल वाद्यों के साथ मिलकर एक समृद्ध लयबद्ध बनावट बनाता है।

8. घन वाद्य (ठोस वाद्य): ताल और रंगत

ये वाद्य ताल और संगीत में एक विशेष रंगत जोड़ने के लिए उपयोग किए जाते हैं।

- **मंजीरा:** यह छोटी झांझों की एक जोड़ी है जिसका उपयोग भजन, कीर्तन और लोक संगीत में ताल देने के लिए किया जाता है। इसकी खनकती हुई ध्वनि संगीत में ऊर्जा और उत्साह जोड़ती है।
- **जल तरंग:** यह एक अनोखा वाद्य है जिसमें पानी से भरे चीनी मिट्टी के कटोरे होते हैं। इन कटोरे पर छड़ी से प्रहार करने पर मधुर ध्वनि निकलती है, जो संगीत में एक अनोखा और शांत प्रभाव जोड़ती है।

संगीत में वाद्य यंत्रों का कलात्मक और सांस्कृतिक महत्व

वाद्य यंत्र भारतीय संगीत के केवल उपकरण नहीं हैं, बल्कि ये इसके अभिन्न और जीवित अंग हैं जो इसकी पहचान को परिभाषित करते हैं।

9. भाव और रस की अभिव्यक्ति का माध्यम

भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूल उद्देश्य **रस (भावना/सार)** की अभिव्यक्ति है। प्रत्येक राग एक विशिष्ट रस (जैसे श्रृंगार, वीर, करुण, शांत) से जुड़ा होता है, और वाद्य यंत्र इस रस को श्रोताओं तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वाद्य यंत्रों की ध्वनि, उनकी मींड, गमक, मुर्की, और अलंकरणों के माध्यम से संगीतकार अपनी भावनाओं और राग के मूड को सटीक रूप से चित्रित करते हैं। एक कुशल कलाकार एक ही राग को विभिन्न वाद्यों पर बजाकर विभिन्न भावनात्मक बारीकियों को उजागर कर सकता है। उदाहरण के लिए, सारंगी की भावपूर्ण ध्वनि विरह और करुणा को अत्यंत गहराई से व्यक्त कर सकती है, जबकि सितार की तीव्र झंकार आनंद और उत्साह को दर्शा सकती है।

10. तकनीकी प्रवीणता और रचनात्मकता का प्रदर्शन

वाद्य यंत्रों का वादन अत्यधिक कौशल, एकाग्रता और वर्षों के निरंतर अभ्यास की मांग करता है। प्रत्येक वाद्य की अपनी अनूठी और जटिल तकनीकें होती हैं जिन्हें सिद्ध करने में एक कलाकार को दशकों लग सकते हैं। कलाकार न केवल वाद्यों को बजाने में प्रवीणता प्राप्त करते हैं, बल्कि अपनी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता का उपयोग करके रागों की नई व्याख्याएँ भी प्रस्तुत करते हैं। वाद्य यंत्रों पर बजाए जाने वाले आलाप (राग का धीमा और विस्तृत विकास), जोड़ (लयबद्ध विकास), झाला (तेज अंतिम खंड) और गत (स्थिर रचना) अपनी तकनीकी जटिलता और कलात्मक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं। यह कला सिर्फ दोहराव नहीं है, बल्कि प्रत्येक प्रदर्शन में नए आयामों की खोज है।

11. संगत और एकल प्रदर्शन का संतुलन

भारतीय संगीत में वाद्य यंत्र एकल प्रदर्शन (सोलो) और संगत (एस्कॉर्ट) दोनों रूपों में महत्वपूर्ण हैं। एकल प्रदर्शन में, वाद्य यंत्र स्वयं केंद्र में होता है और कलाकार अपनी क्षमता का पूरा प्रदर्शन करता है, राग के सभी पहलुओं को उजागर करता है। संगत के रूप में, वाद्य यंत्र (जैसे तबला या हारमोनियम) गायक या अन्य वादक के साथ मिलकर संगीत को पूर्णता प्रदान करते हैं। वे न केवल ताल और स्वर में समर्थन देते हैं, बल्कि संगीत को एक नया आयाम भी प्रदान करते हैं, जहाँ एक वादक दूसरे को पूरक करता है और दोनों मिलकर एक सामंजस्यपूर्ण ध्वनि उत्पन्न करते हैं। यह सहयोगात्मक पहलू भारतीय संगीत की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, जहाँ कलाकार एक-दूसरे की प्रतिक्रिया में सुधार करते हैं।

12. अध्यात्म और ध्यान का माध्यम

कई भारतीय वाद्य यंत्रों का गहरा आध्यात्मिक महत्व है। वीणा को ज्ञान की देवी सरस्वती से जोड़ा जाता है और इसे ब्रहमांडीय ध्वनि (नाद ब्रहम) का प्रतीक माना जाता है। बाँसुरी भगवान कृष्ण से जुड़ी हुई है, और इसकी ध्वनि को दिव्य प्रेम और आकर्षण का प्रतीक माना जाता है। कई संगीतकार अपने वाद्य को एक जीवित सत्ता मानते हैं और उसे अत्यंत सम्मान देते हैं, कभी-कभी पूजा भी करते हैं। वाद्य संगीत को अक्सर ध्यान और आत्म-चिंतन के एक रूप के रूप में देखा जाता है, जहाँ ध्वनि के माध्यम से सर्वोच्च के साथ संबंध स्थापित किया जाता है। कई रागों का नाम देवी-देवताओं या विशिष्ट आध्यात्मिक अवस्थाओं के नाम पर रखा गया है, और इन्हें वाद्य यंत्रों पर बजाने से एक विशेष आध्यात्मिक अनुभव प्राप्त होता है, जो श्रोता को भी ध्यान की स्थिति में ले जा सकता है।

13. सांस्कृतिक पहचान और विरासत का संरक्षण

वाद्य यंत्र भारतीय संस्कृति और पहचान का एक अभिन्न अंग हैं। ये पीढ़ियों से संगीत परंपराओं को आगे बढ़ाने में मदद करते रहे हैं। गुरु-शिष्य परंपरा में, वाद्य यंत्रों के माध्यम से ही ज्ञान और कौशल का मौखिक और व्यावहारिक रूप से हस्तांतरण होता है। कई वाद्य यंत्र अपनी बनावट, अलंकरण और निर्माण प्रक्रिया में क्षेत्रीय कला और शिल्प को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, मीनाकारी की हुई सितारें या लकड़ी पर नक्काशीदार वीणाएँ कलात्मक उत्कृष्टता का प्रदर्शन करती हैं। इनके संरक्षण और प्रचार से न केवल संगीत का बल्कि संबंधित कला रूपों और शिल्प कौशल का भी संरक्षण होता है। यह भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को दर्शाता है।

आधुनिक युग में वाद्य यंत्रों का महत्व और प्रासंगिकता

वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के इस युग में भी भारतीय वाद्य यंत्रों का महत्व न केवल बना हुआ है, बल्कि कई मायनों में बढ़ा भी है।

- **विश्वव्यापी पहचान और फ्यूजन संगीत:** भारतीय वाद्य यंत्रों ने पश्चिमी संगीतकारों और श्रोताओं के बीच भी अपार लोकप्रियता हासिल की है। सितार (बीटल्स के साथ रवि शंकर के सहयोग से), तबला (जैज और इलेक्ट्रॉनिक संगीत में), और बाँसुरी (विश्व संगीत में) जैसे वाद्य यंत्रों का उपयोग विश्व संगीत (World Music) और **फ्यूजन (Fusion)** शैलियों में बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। यह भारतीय संगीत को नए दर्शकों तक पहुँचा रहा है और उसे वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बनाने में मदद कर रहा है।
- **नवाचार और प्रयोग:** आधुनिक संगीतकारों ने पारंपरिक वाद्यों में नए प्रयोग किए हैं। **इलेक्ट्रिक सितार**, **इलेक्ट्रॉनिक तबला** और अन्य संकर वाद्यों का विकास हुआ है, जो पारंपरिक ध्वनि को बनाए रखते हुए समकालीन आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। नए ध्वनि प्रभावों और रिकॉर्डिंग तकनीकों के साथ पारंपरिक वाद्यों का संयोजन संगीत को नई दिशाएँ दे रहा है।
- **डिजिटल मंच का विस्तार:** डिजिटल माध्यमों, जैसे ऑनलाइन संगीत स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म (Spotify, Gaana), यूट्यूब और सोशल मीडिया ने भारतीय वाद्य यंत्रों के संगीत को विश्व के कोने-कोने तक पहुँचाया है। इससे युवा पीढ़ी में इन वाद्यों के प्रति रुचि बढ़ी है और वे आसानी से विभिन्न कलाकारों के प्रदर्शन को सुन और सीख सकते हैं। ऑनलाइन ट्यूटोरियल और क्लासेस भी इन वाद्यों को सीखने के अवसर प्रदान कर रहे हैं।

- **शैक्षिक महत्व और अनुसंधान:** आज भी संगीत अकादमियों, विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में इन वाद्यों का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय है। संगीतशास्त्र के छात्र इन वाद्यों के इतिहास, निर्माण, वादन शैलियों और संगीत सिद्धांतों पर गहन शोध करते हैं। यह शैक्षिक दृष्टिकोण भविष्य की पीढ़ियों को इस कला से जोड़ रहा है और इसकी निरंतरता सुनिश्चित कर रहा है।
- **उपचार और कल्याण:** भारतीय शास्त्रीय संगीत, विशेषकर वाद्य संगीत, का उपयोग अक्सर **संगीत चिकित्सा (Music Therapy)** में किया जाता है। इसकी शांत और लयबद्ध ध्वनि तनाव कम करने, एकाग्रता बढ़ाने और विभिन्न शारीरिक व मानसिक विकारों के उपचार में सहायक सिद्ध हुई है। वाद्य यंत्रों द्वारा उत्पन्न की गई विशिष्ट आवृत्तियाँ शरीर और मन पर सकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

संक्षेप में, भारतीय संगीत में वाद्य यंत्रों का महत्व सिर्फ ध्वनि उत्पन्न करने तक सीमित नहीं है। वे इस महान परंपरा के दिल और आत्मा हैं। ये यंत्र न केवल रागों और तालों को व्यक्त करते हैं, बल्कि भावनाओं, आध्यात्मिक अनुभवों और सांस्कृतिक विरासत को भी आगे बढ़ाते हैं। प्रत्येक वाद्य यंत्र अपनी अनूठी कहानी, ध्वनि और परंपरा के साथ भारतीय संगीत की विशाल और विविध टेपेस्ट्री में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

ये यंत्र सदियों से संगीतकारों और श्रोताओं के बीच एक सेतु का काम करते आए हैं, भावनाओं का संचार करते हुए और आध्यात्मिक अनुभवों को प्रेरित करते हुए। वाद्य यंत्रों के बिना भारतीय संगीत केवल एक अमूर्त विचार रह जाएगा; वे ही हैं जो इसे ठोस, श्रवणीय और कालातीत बनाते हैं। वे भारतीय संगीत के भूत, वर्तमान और भविष्य को एक साथ जोड़ते हैं, और इसकी समृद्ध परंपरा को निरंतर जीवित और विकसित करते हुए, विश्व भर में अपनी पहचान बना रहे हैं। उनकी गूँज और प्रतिध्वनि आने वाली पीढ़ियों तक भारतीय संगीत की गरिमा और सुंदरता का बखान करती रहेगी।